– डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज, बिरौल

स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) – प्रथम खण्ड
(द्वितीय पत्र – प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

रामचरितमानस, बालकाण्ड – दो० 214 (चौपाई – 1, 2, 3, 4)

चौपाई – 1 से 4

(1) कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा। दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा॥
बिप्रबृंद सब सादर बंदे। जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे॥

(2) कुसल प्रस्न कहि बारहिं बारा। बिस्वामित्र नृपहि बैठारा॥
तेहि अवसर आए दोउ भाई। गए रहे देखन फुलवाई॥

(3) स्याम गौर मृदु बयस किसोरा। लोचन सुखद बिस्व चितचोरा॥
उठे सकल जब रघुपति आए। बिस्वामित्र निकट बैठाए॥

(4) भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता॥
मूरति मधुर मनोहर देखी। भयउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी॥

प्रस्तुत पंक्तियाँ, गोस्वामी तुलसीदास की प्रसिद्ध पुस्तक 'रामचरितमानस' के बालकाण्ड से अवतरित हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने राजा जनक का विश्वामित्र एवं राम-लक्ष्मण से मिलने की घटना का वर्णन किया है।

विश्वामित्र के आगमन की सूचना पाने के बाद उनसे मिलने के लिए जनक जी उनके पास गए। राजा ने मुनि के चरणों पर मस्तक रखकर प्रणाम किया। मुनियों के स्वामी विश्वामित्र जी जनक जी को आशीर्वाद दिया। फिर ब्राह्मणजनों को आदर सहित अभिवादन किया और अपना बड़ा भाग्य मानकर आनन्दित हुए। बार-बार कुशल प्रश्न करके विश्वामित्र ने राजा को बैठाया। उसी समय राम और लक्ष्मण दोनों भाई आ पहुँचे, जो फूलों के बाग का भ्रमण करने गए थे। श्याम और गौर वर्ण के दोनों सुकुमार किशोर, जो अपने नेत्रों के आकर्षण से सब के चित्त को हरने वाले हैं। जब रघुनाथ श्री राम आए तब सभी उनके तेज से प्रभावित होकर खड़े हो गए। विश्वामित्र ने उन्हें अपने पास बैठाया। दोनों भाईयों को देखकर सभी सुख का अनुभव कर रहे थे। उनके आँखों में प्रेमानंद के आँसू आ गए। राम के मनोहर छवि को देखकर जनक जी अपने शरीर की सुध-बुध खो बैठें।

Scanned with CamScanner